

# बिहार ऑब्जरवर



## मोदी कैबिनेट का बड़ा फैसला: राशन व्यवस्था होगी हार्डटेक ड्राइखंड के सभी 24 जिलों में खुलेगा अबुआ दवाखाना, कैबिनेट ने दी 39 प्रस्तावों को मंजूरी

### 80 करोड़ लोगों को सीधा लाभ पहुंचाने की तैयारी 'सार्थक-पीडीएस' योजना को मंजूरी, डीलरों का बढ़ेगा कमीशन और राज्यों को मिलेगी आर्थिक सहायता

नई दिल्ली (इंफ़ोएक्स): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को हुई कैबिनेट बैठक में सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को लेकर बड़ा फैसला लिया है। कैबिनेट सरकार ने 'सार्थक-पीडीएस' योजना को मंजूरी दी है, जिसके तहत देश के करीब 80 करोड़ राशन लाभार्थियों को सीधे तौर पर फायदा मिलेगा। इस महत्वाकांक्षी योजना पर लगभग 24,430 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट बैठक के बाद जानकारी देते हुए बताया कि सरकार राशन वितरण प्रणाली को अधिक मजबूत, पारदर्शी और तकनीकी आधारित बनाने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत सीधे बड़े बदलाव किए गए हैं, जिससे राज्यों, राशन डीलरों और आम उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी।

**राज्यों को आर्थिक सहायता**  
कैबिनेट का पहला बड़ा फैसला राज्यों को आर्थिक सहायता देने से जुड़ा है। मंत्री ने बताया कि भारतीय खाद्य



निगम (एफडीआई) के बड़े गोदानों से अनाज को जिलों, ब्लॉकों और अंततः राशन दुकानों तक पहुंचाने में राज्य सरकारों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। अब केंद्र सरकार ने जब कीमतें गिरा दीं और वितरण व्यवस्था में राज्यों को वित्तीय मदद उपलब्ध कराएगी, जिससे राशन आपूर्ति व्यवस्था और अधिक सुचारु हो सकेगी।

**राशन डीलरों का बढ़ेगा कमीशन**  
कैबिनेट का दूसरा महत्वपूर्ण फैसला राशन डीलरों के कमीशन को बढ़ाने का है। लंबे समय से राशन दुकानदार अपने कमीशन में वृद्धि की मांग कर रहे थे। सरकार ने उनकी मांग को स्वीकार करते हुए कमीशन बढ़ाने का फैसला किया है। इससे देशभर के लाखों राशन डीलरों को आर्थिक राहत मिलने की उम्मीद है।

**सामाजिकों का पंजीकरण**  
कैबिनेट का तीसरा और सबसे अहम फैसला जो राशन व्यवस्था को आपूर्तिक तत्कालिक से जोड़ने का है। सरकार अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और डिजिटल तकनीकों की मदद से लाभार्थियों का पंजीकरण करेगी। इससे फर्जीबाड़े पर रोक लगाने, पारदर्शिता बढ़ाने और सही व्यक्ति तक राशन पहुंचाने में मदद मिलेगी। सरकार का मानना है कि डिजिटल और तकनीकी आधारित व्यवस्था से पूरे पीडीएस नेटवर्क को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

**भीषण गर्मी पर हुई चर्चा**  
पीएम मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट बैठक के दौरान देश में जारी भीषण गर्मी की स्थिति पर भी चर्चा हुई। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी मंत्रालयों और विभागों को पूरे राष्ट्र की भावना के साथ काम करने का निर्देश दिया है। स्वास्थ्य, जल संभालण और अन्य विभागों द्वारा नागरिकों को राहत और सुविधा प्रदान करने के उपायों पर विशेष चर्चा की गई।

श्री (एवंकी): झारखंड सरकार राज्य के सभी 24 जिलों में 'अबुआ दवाखाना' स्थापित करेगी, जहां बहु चिकित्सा प्रणाली के तहत एलपीपी, आयुर्विद, होम्योपैथी, यूनानी और सिद्धा पद्धति से इलाज की सुविधा उपलब्ध होगी। बुधवार को प्रोटेक्शन भवन में आयोजित राज्य कैबिनेट की बैठक में इस संबंध में निर्णय लिया गया। बैठक में कुल 39 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई।

कैबिनेट सचिव वंदना दादेल ने बैठक में लिए गए फैसलों की जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना के अंतर्गत विभिन्न स्वास्थ्य उपकेंद्रों, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों तथा स्वास्थ्य विभाग के अन्य भवनों में बहु चिकित्सा प्रणाली पर आधारित एकीकृत औषधि केंद्र 'अबुआ दवाखाना' स्थापित किए जाएंगे। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को एक ही स्थान पर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की आवश्यक दवाइयों और उपचार सुविधाएं उपलब्ध कराना है। आम लोगों को निम्नोक्त वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को पूरे राष्ट्र की भावना के साथ काम करने का निर्देश दिया है। स्वास्थ्य, जल संभालण और अन्य विभागों द्वारा नागरिकों को राहत और सुविधा प्रदान करने के उपायों पर विशेष चर्चा की गई।



योजना के प्रथम चरण में राज्य के सभी 24 जिलों के 694 आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष्म) में एकीकृत औषधि केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इसके लिए मजबूत संरचनात्मक व्यवस्था और प्रभावी संभालण प्रणाली विकसित की जाएगी ताकि स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके। कैबिनेट की बैठक में राज्य में वैश्विक खेती को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नई योजना को भी मंजूरी दी गई। सरकार ने वर्ष 2030-31 तक तीन चरणों में वैश्विक खेती के क्षेत्र को बढ़ावा देना 24 हजार हेक्टेयर से बढ़ाकर 1.4 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस योजना के क्रियान्वयन के लिए कुल 300 करोड़ 50 लाख रुपये खर्च करने की स्वीकृति 8

### ममता बनर्जी के खिलाफ एफआईआर दर्ज

कोलकाता (इंफ़ोएक्स): पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ सिलीगुड़ी साइबर थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। ममता पर आरोप है कि उन्होंने 2024 में कोलकाता में आयोजित इंदू कार्यक्रम के दौरान सनान और हिंदू धर्म को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। विवाद उठा बयान को लेकर है, जिसमें 'गंदा धर्म' जैसे शब्द इस्तेमाल करने का आरोप लगाया गया है। हालांकि, इस मामले पर ममता को अदालत से अब तक कोई प्रतिनिधि सामने नहीं आई है। यह शिकायत वकील रंजिती चटर्जी सिंह ने की है। उनका कहना है कि बयान से लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं। रंजिती ने पुलिस से मामले में कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में कहा गया है कि गुणमूल क्रॉस के कुछ नेता पहले भी हिंदू धर्म को लेकर विवादित बयान देते रहे हैं।

**आंध्र प्रदेश में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण लागू!**  
अमरावती (इंफ़ोएक्स): 33 प्रतिशत महिला आरक्षण पर आंध्र प्रदेश सीएम चंद्रबाबू नायडू की पार्टी तेलुगु देशम पार्टी यानी टीडीपी ने बड़ा फैसला लिया है। टीडीपी ने पार्टी के अंदर 33 प्रतिशत महिला आरक्षण लागू कर दिया है। इसके तहत आगामी चुनावों में महिलाओं को 33 फीसदी सीटों पर आरक्षण दिया जाएगा। आंध्र प्रदेश में बीजेपी की सहयोगी और एनडीए अलायंस की पार्टी टीडीपी ने कहा कि शत्रु भी महिला आरक्षण विलक्ष में लागू नहीं हो पाया।

### काड बैठक के बाद भारत-ऑस्ट्रेलिया रिश्तों को नई मजबूती

जयशंकर और पेनी वॉंग के बीच रक्षा, ऊर्जा, क्रिकेटल मिनरल्स और समुद्री सहयोग पर विस्तृत चर्चा

नई दिल्ली (इंफ़ोएक्स): काड देगों की विदेश मंत्रियों की बैठक के बाद भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल देखने को मिली। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वॉंग के साथ द्विपक्षीय बैठक कर व्यापार, रक्षा, ऊर्जा और क्रिकेटल मिनरल्स समेत कई अहम मुद्दों पर चर्चा की।

बैठक के दौरान विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के संबंध लगातार नई ऊंचाइयों तक पहुंच रहे हैं। उन्होंने बताया कि दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की पिछली मुलाकात के बाद विभिन्न मंत्रालयों और संस्थानों के बीच सहयोग तेज हुआ है। व्यापार और निवेश के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (डीडीटीए) को

नई दिल्ली (इंफ़ोएक्स): नीट-यूजी 2026 री-एजाम को लेकर केंद्र सरकार ने तैयारी तेज कर दी है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मप्रदान ने बताया कि नीट-यूजी 2026 री-एजाम को लेकर केंद्र सरकार ने तैयारी तेज कर दी है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मप्रदान ने बताया कि नीट-यूजी 2026 री-एजाम को लेकर केंद्र सरकार ने तैयारी तेज कर दी है।

**भारत ने लॉन्च किया पहला स्वदेशी सुपर प्रेशर बैलून**  
अंतरिक्ष तकनीक में बड़ी उपलब्धि ० सेटोलाइट से सस्ती तकनीक का कमाल

दिल्ली (इंफ़ोएक्स): पूर्व स्काईस्ट्रेट एयरोस्पेस अधिकारियों द्वारा स्थापित स्टार्टअप रेड बैलून एयरोस्पेस ने बुधवार को विश्वव्यापी से भारत का पहला स्वदेशी सुपर प्रेशर बैलून सफलतापूर्वक लॉन्च किया। यह उपलब्धि भारत को इस अत्याधुनिक तकनीक वाले बुनियादी ढांचे की श्रेणी में शामिल कर सकती है। विज्ञानवादा स्थित इस स्टार्टअप ने हाल ही में सुपर प्रेशर बैलून के टेस्ट ट्रायल किए थे। अब कंपनी का लक्ष्य अपने पहले मिशन के जरिए बैलून को 24 घंटे तक स्ट्रेटोस्फीयर में उड़ाकर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाना है। यह बैलून घंटी से 20 से 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर उड़ान भर सकता है, जो सामान्य विमानों की पहुंच से ऊपर और उपग्रहों की कक्षा से नीचे का क्षेत्र माना जाता है।

यह सुपर प्रेशर बैलून पॉलिमर नैनोकॉम्पोजिट सामग्री से बनाया गया है और इन्होंने हल्की-से हवा तकनीक के तहत हाइड्रोजन गैस भरी गई है। नेविगेशन के लिए इसमें अत्याधुनिक ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (जीएनएसएस) मांजुल लगाया गया है। करीब 40 किलोग्राम तक का पेलोड ले जाने में सक्षम इस बैलून के पहले

दिए हैं कि प्रथम की सुरक्षा, परीक्षा केंद्रों की निगरानी और डिजिटल डेटिंग व्यवस्था को और मजबूत किया जाए। इसके साथ ही फर्नीटेलीग्राम बैलून और पेपर लीक मिश्रों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश भी दिए गए हैं। राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी के अनुसार नीट-यूजी 2026 का री-एजाम 28 जून को आयोजित किया जाएगा। अल्पसंख्यकों के एडमिशन के बारे में चर्चा भी हुई। शिक्षा मंत्री धर्मप्रदान ने कहा कि छात्रों का भविष्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी तरह की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

काई 18 जून से जारी किए जाएंगे। शिक्षा मंत्री धर्मप्रदान ने कहा कि छात्रों का भविष्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी तरह की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

यह सुपर प्रेशर बैलून पॉलिमर नैनोकॉम्पोजिट सामग्री से बनाया गया है और इन्होंने हल्की-से हवा तकनीक के तहत हाइड्रोजन गैस भरी गई है। नेविगेशन के लिए इसमें अत्याधुनिक ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (जीएनएसएस) मांजुल लगाया गया है। करीब 40 किलोग्राम तक का पेलोड ले जाने में सक्षम इस बैलून के पहले

जा रहे हैं। इसके साथ ही दोनों देशों की टीमों क्रिकेटल मिनरल्स यानी महत्वपूर्ण खनिजों की उपलब्धता और रक्षाई केन को सुनिश्चित बनाने पर भी चर्चा कर रही है।

बैठक में रक्षा सहयोग और समुद्री सुरक्षा प्रमुख मुद्दों में शामिल रहे। जयशंकर ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रक्षा अत्यापार और सैन्य आदान-प्रदान लगातार बढ़ रहे हैं। समुद्री सहयोग दोनों देशों की साझेदारी का केंद्रीय हिस्सा बन चुका है। उन्होंने कहा कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षित समुद्री व्यापार सुनिश्चित करने के लिए दोनों देश मिलकर काम करेंगे।

काड बैठक के संदर्भ में विदेश मंत्री ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया ने समुद्री निगरानी, डोमेन अवैयर्स, लॉजिस्टिक्स नेटवर्क, समुद्र के नीचे विद्यार्थी जाने वाली केबल्स, 8

### अब पीएफ का पैसा एटीएम से निकलेगा? नहीं काटना पड़ेंगे दफ्तर के चक्कर

खाताधारक 75 फीसदी पैसा एटीएम या यूपीआई से जब चाहें तब निकाल सकेंगे

नई दिल्ली (इंफ़ोएक्स): पीएफ अमाउंट अब एटीएम से निकलने, पिछले अर्धे सत्र से इसकी चर्चा हो रही है। अब एटीएम से पीएफ के पैसे निकाले जा सकेंगे, तो पीएफ खाताधारकों को अपना ही पैसा निकालने के लिए दफ्तर के चक्कर न काटने पड़ें और न ही लंबे-चौड़े फॉर्म भरने पड़ें। उन्होंने बताया कि एक नया सिस्टम सुनिश्चित किया गया है, जिसके तहत खाताधारक अपने कुल पीएफ फंड का 75 फीसदी हिस्सा जमा रखकर बाकी 25 फीसदी पैसा एटीएम या यूपीआई के जरिए जब चाहें तब निकाल सकेंगे। यह सुविधा अपने महीने से लागू करने की 8

दिल्ली (इंफ़ोएक्स): पीएफ अमाउंट अब एटीएम से निकलने, पिछले अर्धे सत्र से इसकी चर्चा हो रही है। अब एटीएम से पीएफ के पैसे निकाले जा सकेंगे, तो पीएफ खाताधारकों को अपना ही पैसा निकालने के लिए दफ्तर के चक्कर न काटने पड़ें और न ही लंबे-चौड़े फॉर्म भरने पड़ें। उन्होंने बताया कि एक नया सिस्टम सुनिश्चित किया गया है, जिसके तहत खाताधारक अपने कुल पीएफ फंड का 75 फीसदी हिस्सा जमा रखकर बाकी 25 फीसदी पैसा एटीएम या यूपीआई के जरिए जब चाहें तब निकाल सकेंगे। यह सुविधा अपने महीने से लागू करने की 8

दिल्ली (इंफ़ोएक्स): पीएफ अमाउंट अब एटीएम से निकलने, पिछले अर्धे सत्र से इसकी चर्चा हो रही है। अब एटीएम से पीएफ के पैसे निकाले जा सकेंगे, तो पीएफ खाताधारकों को अपना ही पैसा निकालने के लिए दफ्तर के चक्कर न काटने पड़ें और न ही लंबे-चौड़े फॉर्म भरने पड़ें। उन्होंने बताया कि एक नया सिस्टम सुनिश्चित किया गया है, जिसके तहत खाताधारक अपने कुल पीएफ फंड का 75 फीसदी हिस्सा जमा रखकर बाकी 25 फीसदी पैसा एटीएम या यूपीआई के जरिए जब चाहें तब निकाल सकेंगे। यह सुविधा अपने महीने से लागू करने की 8

दिल्ली (इंफ़ोएक्स): पीएफ अमाउंट अब एटीएम से निकलने, पिछले अर्धे सत्र से इसकी चर्चा हो रही है। अब एटीएम से पीएफ के पैसे निकाले जा सकेंगे, तो पीएफ खाताधारकों को अपना ही पैसा निकालने के लिए दफ्तर के चक्कर न काटने पड़ें और न ही लंबे-चौड़े फॉर्म भरने पड़ें। उन्होंने बताया कि एक नया सिस्टम सुनिश्चित किया गया है, जिसके तहत खाताधारक अपने कुल पीएफ फंड का 75 फीसदी हिस्सा जमा रखकर बाकी 25 फीसदी पैसा एटीएम या यूपीआई के जरिए जब चाहें तब निकाल सकेंगे। यह सुविधा अपने महीने से लागू करने की 8

### काकोली घोष का सभी पदों से इस्तीफा

कोलकाता (इंफ़ोएक्स): तुषमूल कौस्तुभ की संसद काकोली घोष दलीदार ने बुधवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। काकोली घोष दलीदार को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद ममता बनर्जी की पार्टी ने लोकसभा संकेत के पद से हटा दिया था। माना जा रहा है कि पार्टी के इस फैसले के बाद ही वह नाराज चर्च रही थी। 8

कोलकाता (इंफ़ोएक्स): तुषमूल कौस्तुभ की संसद काकोली घोष दलीदार ने बुधवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। काकोली घोष दलीदार को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद ममता बनर्जी की पार्टी ने लोकसभा संकेत के पद से हटा दिया था। माना जा रहा है कि पार्टी के इस फैसले के बाद ही वह नाराज चर्च रही थी। 8

कोलकाता (इंफ़ोएक्स): तुषमूल कौस्तुभ की संसद काकोली घोष दलीदार ने बुधवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। काकोली घोष दलीदार को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद ममता बनर्जी की पार्टी ने लोकसभा संकेत के पद से हटा दिया था। माना जा रहा है कि पार्टी के इस फैसले के बाद ही वह नाराज चर्च रही थी। 8

कोलकाता (इंफ़ोएक्स): तुषमूल कौस्तुभ की संसद काकोली घोष दलीदार ने बुधवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। काकोली घोष दलीदार को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद ममता बनर्जी की पार्टी ने लोकसभा संकेत के पद से हटा दिया था। माना जा रहा है कि पार्टी के इस फैसले के बाद ही वह नाराज चर्च रही थी। 8

संतोष कुमार गंगवार  
राज्यपाल, झारखण्ड

हेमन्त सोरेन  
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

## पाक त्योहार

# ईद-उल-अज़हा

### के अवसर पर समस्त झारखण्ड वासियों को दिली मुबारकबाद

## संदेश

ईद-उल-अज़हा कुर्बानी का पर्व है। यह पाक त्योहार हमें जीवन में त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता है। यह त्याग ही वह महत्वपूर्ण जीवनमूल्य है, जो परिवार, समाज और देश की एकजुटता को कायम रख पाता है।

आइये, आज इस पाक त्योहार के अवसर पर हमसब मिलकर यह संकल्प लें कि हम कुर्बानी, सहृदयता और सद्भाव का जन्म बनाये रखेंगे तथा अपने राज्य और राष्ट्र की विविध सांस्कृतिक विरासत को कायम रखने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, झारखण्ड

# संपादकीय

# लीक, रद्द और दोबारा परीक्षा...

पिछले सप्ताह जयपुर में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मदेव प्रधान को खिलाफ कांग्रेस ने प्रदर्शन किया। 'धर्मदेव प्रधान इस्तीफा दे' के नारे सुनने में आए और प्रधानमंत्री पर भी अंग्रेजी उदाह 'नीट' में फिर प्रश्नपत्र लीक हो गई को लेकर। आक्रोश इतना था प्रदर्शनकारियों में कि पीठ को काटने में लगे थे कि प्रश्नपत्र खोजे नहीं पड़ी। पीठ को दोहराकर मंत्रों में एक ही सवाल उदा बार-बार और जब वह कि इतना आक्रोश क्यों नहीं हम देख रहे हैं उन छात्रों में, जिनको दोबारा परीक्षा देनी पड़ेगी।

दो साल पहले जब इसी तरह पेपर लीक हुआ था, तो शिक्षा मंत्री ने पहले तो खोलाखी ही नहीं किया कि पेपर लीक हुआ है। जब 'लीक' साबित हुई, तो मंत्रीजी ने प्रेस वार्ता बुलाकर माफी मांगी, लेकिन उसके बाद सुधार के तौर पर अगर कोई काम उठाए गए हैं, तो इतने चुपके से कि किसी को पता तक नहीं लगा।

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) अपने सारे काम चलाए-पूरे किए क्यों करती है, यह किसी को मालूम नहीं, लेकिन अब सवाल इतने उठने लगे हैं जो कि फिर पढ़ें के पीछे से इस संस्था को सामने आना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल। इस बार नीबट शिक्षा मंत्रों के त्यागपत्र तक आ सकती है। दिल्ली के आलायत नौकरियों गैलियरियों में चर्चा यह है कि धर्मदेव प्रधान को प्रधानमंत्री के करीबियों में माना जाता है, इसलिए उनका खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई है अभी तक, लेकिन भारतीय उच्च शिक्षा की समस्याएँ उन तक रहने से हल होगी और न ही उनके जाने से।

भारत माना है कि भारत का विकास होने का रास्ता तब तक बंद रहेगा, जब तक हम अपने कर्तव्यों के लिए अच्छे स्कूल-कॉलेज नहीं तैयार

करते। इसलिए मैं बहुत दिनों से अपनी बेहतर शिक्षा संस्थाओं पर लिखती आई हूँ। जब भी प्राचीन भारत के दौर पर जाती हूँ, तो प्रथम करती हूँ हर गाँव में पहले सार्वकारी स्कूल का हाल जानने की। सोच विचार मानिए, आज तक मैंने एक भी सार्वकारी स्कूल नहीं देखा है जिसकी तुलना अच्छे निजी स्कूलों से की जा सकती हो। निजी स्कूलों में साफ-सुथरी कक्षाएँ होती हैं, अध्यापक होते हैं, जो एक विषय को पढ़ाने के लिए ही खड़े जाते हैं। पुरानकालय होते हैं, खेलकूद के मैदान होते हैं और आज के दौर में एआई की मदद लेकर आधुनिक पढ़ाई होती है। क्या ऐसा सार्वकारी स्कूल देखा है आपने भारत में? होते ऐसे स्कूल, तो क्या नेता और आलायत अधिकारी अपने बच्चों को निजी स्कूलों में डालते? जब शिक्षा की सोझी की पहली पीढ़ी ही इतनी कमजोर हो, तो आगे की पीढ़ी कैसे



मजबूत हो सकती है? हमारी समस्या यह है कि राजनीतिज्ञों ने शुरू से शिक्षा की अहमियत नहीं समझी। जवाहरलाल नेहरू जब प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने उच्च शिक्षा पर ध्यान जरूर दिया, लेकिन जब पीठ कर कि आईआईटी जैसी संस्थाओं में पढ़ते बच्चे चुंच सकेंगे, निजी-अच्छे स्कूलों में पढ़ाई हुई तो ऐसा हुआ है। कुछ मुद्दे भारतीय विचारों ही शिक्षा की सोझी बंदूक पर है ऊपर तक।

अभयसिंह कि हमने से कई लाख, जो हमसे कवित्व है, जल्दी देना छोड़कर किसी कवित्वक परिचय देना में काम बंदूके जाते जाते। हाल यह है कि विद्यार्थी से आकर जो डॉक्टर काम कर रहे हैं संस्कृत राज्य अभिरक्षा में, उनमें से बीस फीसदी भारतीय मूल के हैं यानी जो बच्चे डॉक्टरों में से एक भारतीय मूल का होता है।

अधिक अम्लीय और आक्सीजन-रहित बना रहा है। इससे प्रवाल भित्तियाँ नष्ट हो रही हैं। मछलियों के प्रवास के मार्ग बदल रहे हैं और कई समुद्री प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट संचार एक अप्रैल 2023 से 'महासागर-जंगल' में जुटी है। एक दशक में दस लाख नई प्रजातियों की पहचान करना उतना लक्ष्य है।

नई प्रजातियों की खोज के दौरान हिंद महासागर के पास कोकोस कीलिंग द्वीप समूह में 1175 से 1896 मीटर की गहराई में कई नई प्रजातियों की खोज की गई है। अल नीनो के कारण 'जंबो स्क्वीड' के प्रवास और प्रजनन समय में बदलाव देखा गया है। 'नेबर' की रफ्तक के अनुपात यह समुद्र के बड़े तापमान का सीधा असर है। वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि समुद्री जीव-प्रजातियों से जुड़े अंतर्जाल की तुलना से नई प्रजातियों की खोज तेज हो सकती है। कुछ वर्ष पहले जर्मनी के अन्तर्देशिककर्ताओं को छेदे-तीनी की खोज के दौरान दो सी से अधिक समुद्री प्रजातियों का पता चला। उनमें से दो दर्जन से ज्यादा नई प्रजातियाँ हैं। छेदे-तीनी इतना आकार होते हैं और बड़े-जिंजी इतको खा जाते हैं। गौरतलब है कि ये समुद्र की सफाई भी करते हैं। समुद्र में नई प्रजातियों की पहचान करना वैदिक श्रमश्रम काय है। एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया है नई प्रजातियों की पहचान की जाती है। यह अनुभव समुद्री प्राकृतिक संपत्तियों की बेहतर पहचान को भी समझ करता है।

जलवायु परिवर्तन और प्रवास के बीच गहरा संबंध है। इस समय पॉलीवर्ण का दबाव दिख रहा है। समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, मरुस्थलीकरण और विनाशकारी मौसम कृषि को नष्ट कर रहे हैं। इससे जीव-जंतु भोजन की तलाश में मूल स्थानों से दूर अन्वय प्रवास करने लगे हैं। जलवायु परिवर्तन खास तौर से प्रकृति पथियों को प्रभावित कर रहा है, जिससे ये अनुकूल जलवायु की तलाश में अन्य स्थानों पर जा रहे हैं। प्रवास का स्वरूप बदलने से कई क्षेत्रों, विशेषकर तटीय वसावटों में, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ एक बड़ी वजह बन रही हैं। जलवायु परिवर्तन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बड़ा खतरा बनाता जा रहा है, जो महासागरों को गर्म,

## पूर्वाग्रह से किसी खिलाड़ी का आकलन न हो



खेल की दुनिया में योग्यता-अयोग्यता की कसौटी कई बार क्षमताओं की बाधिका करती या फिर नजरअंदाज करने की हद तक चली जाती है। जबकि यह संप्रभव है कि किसी खिलाड़ी को मैदान से बाहर करने के लिए जिन नियमों का हवाला जाता है, उनका कोई खास मतलब नहीं होता है। बस कुछ पूर्वग्रहों की वजह से नियमों की बहाना बना लिया जाता है और एक सक्षम खिलाड़ी से उसके अक्सर छेदन लिग जाती है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इसी प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए भारतीय क्रिकेट महासंघ को फटकार लगाई और कहा कि हमारे देश में माँ बनना कोई गुनाह नहीं है और क्रिकेट महासंघ को बदले की भावना से काम नहीं करना चाहिए। अदालत ने महिला क्रिकेट खिलाड़ी विनेश फोगाट को पुरस्कार खेले के लिए होने वाली चयन प्रक्रियाओं में हिस्सा लेने की अनुमति दे दी। भारतीय महिला खेलकूद विनोद फोगाट माँ बनने के बाद अपर फिटर से क्रिकेट प्रतिस्पर्धाओं में खेलने के 'अयोग्य' घोषित कर दिया था। दिल्ली हाईकोर्ट ने यह सवाल उठाया कि जब विनेश फोगाट देश की एक स्थापित और शीर्ष स्तर की फलरवान रही हैं, तो नियमों में अचानक बदलाव करके उन्हें खेलने से दूर करने की कोशिश क्यों की जा रही है। गौरतलब है कि विनेश फोगाट को भारत की सबसे कामयाब महिला फलरवानों में से एक माना जाता है। 2024 के फिटर ओलिंपिक में एक तकनीकी वजह से उनके करीब आठ महीने तक फलरवान नहीं हो, लेकिन उनसे पर निकल कर उनमें से चुनौती सामने आई थी, लेकिन उनसे पर निकल कर उनमें से चुनौती सामने आई थी, लेकिन उनसे पर निकल कर उनमें से चुनौती सामने आई थी।

## समुद्री पारिस्थितिकी के सामने जटिल चुनौतियाँ



बढ़ता तापमान मृग म्रियों को नष्ट कर रहा है जो समुद्री जैव विविधता के केन्द्र हैं। गर्म पानी से बचने के लिए मछलियाँ और अन्य जीव ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। गर्म पानी में आक्सीजन कम होती है, जिससे मछलियाँ और अन्य जीवों का दम घूट रहा है। महासागर धाराएँ धीरे-धीरे अस्थिर हो रही हैं, जो शंख, घोड़े और अन्य कैल्शियम कार्बोनेट कवच वाले जीवों के खोल को गला रहा है। तापमान के बदलाव के कारण मछलियों के प्रजनन का समय बदल रहा है, जिससे उनकी आबादी प्रभावित हो रही है। गर्म पानी में हानिकारक शैवाल तेजी से बढ़ते हैं जो समुद्री जीवों को विषैला बनाते के साथ उन्हें मार भी देते हैं। ये परिवर्तन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के नाजूक संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। पुरे समुद्री क्षेत्र में स्थानीय प्रजातियों के विलुप्त होने का जोखिम गहरता जा रहा है।

जव प्रकृत त्रिपाटी

समुद्री जीवों पर चरम मौसम का प्रभाव गहरा और बहुआयामी होता है। जलवायु आधारित से जुड़ी प्रजातियों और समुद्र संरक्षण पर संयुक्त राष्ट्र की संधि महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र में समुद्री जीवों को रक्षा करना है।

समुद्री समुद्री अनुसंधान के ताज़ा विशेष आर्थिक क्षेत्र में यह समुद्र के जीवों की गिनती का जा रही है। अर्जेंटीना में शैवाल के कारण प्रदूषण से समुद्री सतपार्थियों तक पहुँचने वाली एक को लेकर अध्ययन किए जा रहे हैं। अर्थव्यवस्था में पकड़ने से 37.7 फीसद मत्स्य भंडार प्रभावित हो रहे हैं।

शोध रफ्तक बताती है कि 1970 के बाद से शार्क और अन्य प्रजातियों में 71 फीसद की गिनत हुई है। अब वैश्विक अधिभार का लक्ष्य आने से दस वर्षों में एक लाख नई प्रजातियों का पता लगाना है। अभी चिंता की बात यह है कि शैवाल के कारण बढ़ते प्रदूषण से कई समुद्री प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं।

भारतीय समुद्री क्षेत्र में मार्च 2025 तक समुद्री जीवों की गणना के लिए पचास अधिभार के तहत 850 से अधिक नई समुद्री प्रजातियों की खोज की गई थी। ऑफिशियल नौटिकल रिकॉर्डिंग एंड रीजिस्ट्रेशन की खोज में 'सी स्टार' जैसी नई प्रजातियाँ खोजी गई हैं। ये खोजें समुद्री जैव विविधता को समर्थन के लिए बेहतर महत्वपूर्ण हैं। इसलिए नई प्रजातियों की खोज आवश्यक है, क्योंकि गहरे समुद्र की 90 फीसद प्रजातियाँ अभी भी अज्ञात हैं।

विमलनाडु के कोलाचल तट पर 'स्नेक ईल' की नई प्रजाति खोजी गई है। इसी तरह बंगाल की खाड़ी के तट पर खोजी गई है 'शेल्ड' 'सी स्टार' की नई प्रजाति है। शोकराजों में एक इमारत मोटर से अधिक की समुद्री प्रजाति है 'वेल्डोपिगिना प्रेटेंडेंस' नामक एक दुर्लभ प्रजाति है और प्रजातियों समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन और संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

समुद्री जैव विविधता पर ताज़ा अनुसंधान (2025-2026) जलवायु परिवर्तन, तापमान परिवर्तन के प्रभाव और गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र पर केंद्रित है। गौरतलब है कि 2026 में लागू ऐतिहासिक समुद्री समझौता अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र को जैव विविधता को रक्षा करने। समुद्री जीवों की खोज को गति देते हुए महासागर जंगल जंगल में 866 नई समुद्री प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है।

उत्कृष्ट खनियन है कि 71 फीसद क्षेत्रफल में फैला महासागर पुष्पी पर जीवन का मूलभूत आधार है। इसकी विशाल जैव विविधता जलवायु को नियंत्रित करने में सहायक है और महासागरों में स्वस्थ, आजीविका और खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने में मदद करती है। फिर भी, महासागर का अधिकांश भाग अनसूझा ही है और अब तक केवल लगभग दस फीसद समुद्री प्रजातियों का ही दस्तावेजीकरण किया जा सका है।

इसके रहस्यों को उजागर करना जैव विविधता की रक्षा, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन विकसित करने और स्थानीय प्रकृति सुनिश्चित करने के लिए अंतर्गत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः किसी नई प्रजाति की आन्विकारिक पहचान में एक दशक अथवा इससे अधिक समय भी लग जाता है।



समुद्री जीवन की पहचान में तेजी लाने के चाहे सामाजिक नवाचार के लिए समर्थित कई गैर-लाभकारी संस्थाएँ भी समुद्री विज्ञान को संरक्षित कर रही हैं। उन्हीं में से कुछ संस्थाएँ एक अप्रैल 2023 से 'महासागर-जंगल' में जुटी है। एक दशक में दस लाख नई प्रजातियों की पहचान करना उतना लक्ष्य है।

नई प्रजातियों की खोज के दौरान हिंद महासागर के पास कोकोस कीलिंग द्वीप समूह में 1175 से 1896 मीटर की गहराई में कई नई प्रजातियों की खोज की गई है। अल नीनो के कारण 'जंबो स्क्वीड' के प्रवास और प्रजनन समय में बदलाव देखा गया है। 'नेबर' की रफ्तक के अनुपात यह समुद्र के बड़े तापमान का सीधा असर है। वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि समुद्री जीव-प्रजातियों से जुड़े अंतर्जाल की तुलना से नई प्रजातियों की खोज तेज हो सकती है। कुछ वर्ष पहले जर्मनी के अन्तर्देशिककर्ताओं को छेदे-तीनी की खोज के दौरान दो सी से अधिक समुद्री प्रजातियों का पता चला। उनमें से दो दर्जन से ज्यादा नई प्रजातियाँ हैं। छेदे-तीनी इतना आकार होते हैं और बड़े-जिंजी इतको खा जाते हैं। गौरतलब है कि ये समुद्र की सफाई भी करते हैं। समुद्र में नई प्रजातियों की पहचान करना वैदिक श्रमश्रम काय है। एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया है नई प्रजातियों की पहचान की जाती है। यह अनुभव समुद्री प्राकृतिक संपत्तियों की बेहतर पहचान को भी समझ करता है।

जलवायु परिवर्तन और प्रवास के बीच गहरा संबंध है। इस समय पॉलीवर्ण का दबाव दिख रहा है। समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, मरुस्थलीकरण और विनाशकारी मौसम कृषि को नष्ट कर रहे हैं। इससे जीव-जंतु भोजन की तलाश में मूल स्थानों से दूर अन्वय प्रवास करने लगे हैं। जलवायु परिवर्तन खास तौर से प्रकृति पथियों को प्रभावित कर रहा है, जिससे ये अनुकूल जलवायु की तलाश में अन्य स्थानों पर जा रहे हैं। प्रवास का स्वरूप बदलने से कई क्षेत्रों, विशेषकर तटीय वसावटों में, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ एक बड़ी वजह बन रही हैं। जलवायु परिवर्तन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बड़ा खतरा बनाता जा रहा है, जो महासागरों को गर्म,

अधिक अम्लीय और आक्सीजन-रहित बना रहा है। इससे प्रवाल भित्तियाँ नष्ट हो रही हैं। मछलियों के प्रवास के मार्ग बदल रहे हैं और कई समुद्री प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट संचार एक अप्रैल 2023 से 'महासागर-जंगल' में जुटी है। एक दशक में दस लाख नई प्रजातियों की पहचान करना उतना लक्ष्य है।

नई प्रजातियों की खोज के दौरान हिंद महासागर के पास कोकोस कीलिंग द्वीप समूह में 1175 से 1896 मीटर की गहराई में कई नई प्रजातियों की खोज की गई है। अल नीनो के कारण 'जंबो स्क्वीड' के प्रवास और प्रजनन समय में बदलाव देखा गया है। 'नेबर' की रफ्तक के अनुपात यह समुद्र के बड़े तापमान का सीधा असर है। वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि समुद्री जीव-प्रजातियों से जुड़े अंतर्जाल की तुलना से नई प्रजातियों की खोज तेज हो सकती है। कुछ वर्ष पहले जर्मनी के अन्तर्देशिककर्ताओं को छेदे-तीनी की खोज के दौरान दो सी से अधिक समुद्री प्रजातियों का पता चला। उनमें से दो दर्जन से ज्यादा नई प्रजातियाँ हैं। छेदे-तीनी इतना आकार होते हैं और बड़े-जिंजी इतको खा जाते हैं। गौरतलब है कि ये समुद्र की सफाई भी करते हैं। समुद्र में नई प्रजातियों की पहचान करना वैदिक श्रमश्रम काय है। एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया है नई प्रजातियों की पहचान की जाती है। यह अनुभव समुद्री प्राकृतिक संपत्तियों की बेहतर पहचान को भी समझ करता है।

जलवायु परिवर्तन और प्रवास के बीच गहरा संबंध है। इस समय पॉलीवर्ण का दबाव दिख रहा है। समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, मरुस्थलीकरण और विनाशकारी मौसम कृषि को नष्ट कर रहे हैं। इससे जीव-जंतु भोजन की तलाश में मूल स्थानों से दूर अन्वय प्रवास करने लगे हैं। जलवायु परिवर्तन खास तौर से प्रकृति पथियों को प्रभावित कर रहा है, जिससे ये अनुकूल जलवायु की तलाश में अन्य स्थानों पर जा रहे हैं। प्रवास का स्वरूप बदलने से कई क्षेत्रों, विशेषकर तटीय वसावटों में, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ एक बड़ी वजह बन रही हैं। जलवायु परिवर्तन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बड़ा खतरा बनाता जा रहा है, जो महासागरों को गर्म,

आज का कार्टून

मुझे भारत पसंद, आई लव पीएम मोदी - बालाल ट्रूप का सफ़ाईज काल

ये आदमी है या पजामा!!

## एआई अब तक की तकनीकों से अलग और विशिष्ट

मानव इतिहास पर टूटि जाते, तो जब पहली बार मनुष्य के हाथ में कलम आई होगी, तब उसे अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम मिला। इसके बाद कांप्यूटर आया, जिसने कार्य की गति और दायरा दोनों को विस्तृत किया। कृत्रिम बुद्धिभाषा को भी हमें इसी रूप से देखना चाहिए- एक उपकरण के रूप में। यह हमारे विचारों का स्थान लेने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें और अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए है। अगर इसका संतुलित उपयोग किया जाए, तो यह हमें रोजगार के छेदे-छोटे कार्यों से मुक्त कर सकता है और हमें सोचने, सीखने तथा सृजन करने के लिए अधिक समय दे सकता है।

एकटा कानूनगो बसी

नई तकनीकों हमेशा से ही आम इंसान को चकित करती रही हैं। इन तकनीकों 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' यानी कृत्रिम बुद्धिभाषा चर्चा के केन्द्र में हैं। हमारे जीवन में ऐसा ही कौतूहल तब भी देखने को मिला था, जब कंप्यूटर और मोबाइल का आगमन हुआ था। हर नई तकनीक आम व्यक्ति के मन में एक स्वाभाविक प्रश्न खड़ा करती है- क्या यह उसके जीवन को बेहतर बनाएगी या उसे और पीछे धकेले देगी?

इस संदर्भ में यह समझना महत्वपूर्ण है कि मशीनें अब तक मनुष्य के निर्देशों पर ही काम करती आई हैं। ये निष्पक्ष होकर एक समान तरीके से कार्य कर सकती हैं, लेकिन उनकी दिशा और उद्देश्य मनुष्य ही तय करता है। अगर तकनीक का विकास मानवीय मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ किया जाए, तो वह केवल सुविधा का साधन नहीं, बल्कि अवसरों का विस्तार करने वाला माध्यम बन सकता है। जब आम लोग जुगाड़ और तकनीकों से आगे बढ़कर तकनीक के माध्यम से अपने जीवन को बेहतर बनाने लगे, तब सभ्यता जा सकता है कि वह तकनीक एक स्कार्पायनक परिवर्तन को और बढ़ा रही है। इसी दृष्टि में कृत्रिम बुद्धिभाषा अब तक की तकनीकों से अलग और विशिष्ट है, क्योंकि इसे इंसानों की तरह काम



करने और निर्णय लेने के लिए विकसित किया गया है। यही कारण है कि यह कई क्षेत्रों में अपने-अपने प्रयोगों को लागू कर रहा है। मानव इतिहास में पहली बार मनुष्य के हाथ में कलम आई होगी, तब उसे अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम मिला। इसके बाद कांप्यूटर आया, जिसने कार्य की गति और दायरा दोनों को विस्तृत किया। कृत्रिम बुद्धिभाषा को भी हमें इसी रूप से देखना चाहिए- एक उपकरण के रूप में। यह हमारे विचारों का स्थान लेने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें और अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए है।

असंभव या भ्रमकल्प लग सकता है, लेकिन अब यह वास्तविकता बन चुका है। मानव इतिहास में पहली बार मनुष्य के हाथ में कलम आई होगी, तब उसे अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम मिला। इसके बाद कांप्यूटर आया, जिसने कार्य की गति और दायरा दोनों को विस्तृत किया। कृत्रिम बुद्धिभाषा को भी हमें इसी रूप से देखना चाहिए- एक उपकरण के रूप में। यह हमारे विचारों का स्थान लेने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें और अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए है।

अगर इसका संतुलित उपयोग किया जाए, तो यह हमें रोजगार के छेदे-छोटे कार्यों से मुक्त कर सकता है और हमें सोचने, सीखने तथा सृजन करने के लिए अधिक समय दे सकता है।

मानव यह भी आवश्यक है कि हम इसे अपनी बौद्धिक क्षमता का विकल्प न बनाएं दें। जैसे-जैसे काम केवल लिखने में सहायता करती है, विचार नहीं देती, वैसे ही कृत्रिम बुद्धिभाषा भी तभी सार्थक है, जब वह मनुष्य के विचारों, सोचने के साथ मिलकर कार्य करे।

विज्ञान-कथा फिल्मों में अक्सर एक विशाल और शक्तिशाली रोबोट दिखाया जाता है, जिसे नियंत्रित करने वाला एक छोटा-सा जीव होता है। यह दृश्य प्रतीकात्मक भी है। अगर हम एआई का उपयोग अपनी क्षमता बढ़ाने के बजाय केवल परिश्रम से बचने के लिए करते लगे, तो भविष्य में हमारी स्थिति भी कुछ ऐसी ही सकती है, जब हमारी शक्तिशाली आँखें और मनुष्य अपनी ही क्षमताओं से दूर होकर चला जाए। हम बिना समझे और सोचें केवल कृत्रिम बुद्धिभाषा पर निर्भर हो जाएँ, तो हमारी सोच सीमित हो सकती है। हम नए विचारों के बजाय पहले से बने ढाँचे को दोहराने लगेंगे।

तकनीकशास्त्र और मौलिकता का आधार, जिज्ञासा और सीखने की इच्छा है। यह हमजोड़ें, बड़कें उन्ने और अपनी की प्रति की बाबरूद हमारी बौद्धिक क्षमता बढ़ सकती है।

यह भी ध्यान रखने योग्य है कि कृत्रिम बुद्धिभाषा को संतुलित करने वाला डेटा और अर्थव्यवस्था के अर्थ और पानी का उपयोग करते हैं। इसलिए इसका उपयोग जिम्मेदार और संतुलन

के साथ करना आवश्यक है। तकनीक जितनी शक्तिशाली होती है, उसके उपयोग में इतनी ही सज्जता और विशिष्टता होती है। आर्थिकता तकनीक, किन्तु भी उनत क्यों न हो जाए, समाज को हमेशा सँतुलित की जरूरत होगी। प्रगति, प्रगति और समाजसेवियों की आवश्यकता हमेशा बनी रहती। मशीनें जानकारों से समर्थनी हैं, स्वरूप पहचान सकती हैं और कार्य को तय कर सकती हैं, लेकिन कल्पना, संवेदन और सामाजिक प्रतिबद्धता जैसे गुण मनुष्य के ही हैं। एक चिकित्सक केवल रोगों से चित्र नहीं बनाता, वह अपने समय को भावनाओं को केवल से उतारता है। एक दार्शनिक केवल प्रश्न नहीं उठाता, बल्कि जीवन को समझने के लिए पुष्टिकरण देता है। और एक समाजसेवी समाज को हमेशा आवश्यकता होती है। यह कारणों, जो हमें हमेशा से सृजन करता है। यह शक्ति को ईमानदारी से ज्ञान देता है, बड़े शक्ति को हमेशा इंसान से समाज की मूल मूल्य बनाती है। इनकी प्रतिक्रिया किन्तु भी तकनीक के काम नहीं हो सकती। तकनीक हमें काम को आसान बना सकती है, लेकिन समाज, ईमानदारी और हम का मूल्य आज भी वहीं है, जो पहले था।















पेरेंट्स हमेशा चाहते हैं कि उनका बच्चा जीवन में एक सफल इंसान बने। लेकिन सफलता सिर्फ पढ़ाई-लिखाई, अच्छे नंबर या बड़ी डिग्री से नहीं मिलती है बल्कि सफलता तब मिलती है, जब बच्चा अंदर से एक मजबूत इंसान बनता है। यह मजबूती उसे उन छोटी-छोटी लाइफ रिचल्स से मिलती है, जो उसे मुश्किल समय में संभालती हैं। आज के समय में बच्चों पर पढ़ाई और परफॉर्मंस का दबाव पहले से कहीं ज्यादा है। ऐसे में जरूरी है कि बच्चे अंदर से मजबूत बनें। उन्हें यह समझ आए कि हर बात दिल पर लेना जरूरी नहीं, हर परेशानी से भागना सही नहीं और मदद मांगना कमजोरी नहीं होती। ऐसे में अगर बच्चा ये 5 जरूरी लाइफ रिचल सीख लेता है, तो वह सिर्फ पढ़ाई में नहीं बल्कि जिंदगी के हर मांडू पर खुद को संभाल पाएगा।

## सिर्फ पढ़ाई काफी नहीं! बच्चे में ये 5 स्किल्स होना भी जरूरी है, फिर लाइफ में कभी नहीं टूटेगा

शांत रहना, अपनी भावनाओं को संभालना और सही समय पर सही जवाब देना सीखना चाहिए। यह आदत उसे मेंटली स्ट्रॉंग बनाएगी।

अपनी भावनाएं खुलकर बताना जरूरी है। कई बार बच्चे यह सोचने लगते हैं कि अगर उन्होंने मदद मांगी, तो लोग उन्हें कमजोर समझेंगे। यही सोच उन्हें अकेला महसूस कराने लगती है। जबकि सच यह है कि जरूरत पड़ने पर मदद मांगना एक अच्छी आदत है। बच्चे को समझाएं कि हर इंसान को कभी न कभी किसी की जरूरत पड़ती है। अगर पढ़ाई में दिक्कत हो, मन खराब हो या कोई समस्या समझ में आए, तो भरोसेमंद लोगों से बात करना सही होता है। इससे बच्चा अंदर ही अंदर घुटने की भावना खुलकर अपनी परेशानी साझा करना सीख जाता है, तो उसके रिश्ते भी

बेहतर होते हैं और उसका मेंटल स्ट्रेस भी कम होता है, जिससे बच्चा अच्छे से ग्रो कर पाएगा।

नंबरों से ज्यादा जरूरी है बच्चे की खुद की पहचान। बहुत से बच्चे अपने नंबरों के अगार पर खुद को आकने लगते हैं। अच्छे मार्कस आते तो खुश, वही कम आते तो खुद को बेकार समझने लगते हैं। यह सोच बच्चे के आत्मविश्वास को धीरे-धीरे कमजोर कर देती है। ऐसे में उसे यह महसूस करवाना जरूरी है कि उसकी कीमती सिर्फ रिपोर्ट कार्ड से तय नहीं होती। उसकी मेहनत, व्यवहार, सोच और कोशिश भी उतनी ही जरूरी हैं। अगर बच्चा खुद को सिर्फ नंबरों से जोड़कर देखेगा तो छोटी असफलता भी उसे अंदर से तोड़ सकती है। लेकिन जब वह अपनी असली पहचान समझेगा, तब वह हर परिस्थिति में खुद पर भरोसा रखना सीखेगा।

### बेइज्जती को बिना टूटे संभालना

जीवन में हर जगह तारीफ नहीं मिलेगी। कभी स्कूल में, कभी जेस्टो के बीच तो कभी काम की जगह पर बच्चे को ऐसी बातें सुनी पड़ सकती हैं जो उसे बुरी लगे। ऐसे समय में अगर बच्चा हर बात से टूट जाता है तो उसका आत्मविश्वास धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है। इसलिए उसे यह सिखाना जरूरी है कि हर किसी की राय उसकी जड़ना तय नहीं करती। बच्चे को समझाएं कि कुछ लोग गलत बोल सकते हैं, लेकिन सच्चा मतलब यह नहीं कि वह गलत है। उसे

### शोड़ी परेशानी और असुविधा सहना जरूरी है

आज के समय में कई बच्चे छोटी-छोटी असुविधाओं से परेशान हो जाते हैं। थोड़ी हार, थोड़ा इंतजार या थोड़ी मेहनत भी उन्हें भारी लगने लगती है। लेकिन जिंदगी हमेशा आरामदायक नहीं होती। कई बार मुश्किल हालात से गुजरना पड़ता है। ऐसे में बच्चा तभी मजबूत रहेगा, जब वह थोड़ी असुविधा सहना सीख चुका होगा। उसे हर समय तुरंत सुविधा देने के बजाय कभी-कभी चीजों का इंतजार करना सिखाएं। हर समस्या का हल तुरंत देने की बजाय उसे खुद कोशिश करने दें। इससे उसके अंदर पैर

### अपनी भावनाएं खुलकर बताना जरूरी है

कई बार बच्चे यह सोचने लगते हैं कि अगर उन्होंने मदद मांगी, तो लोग उन्हें कमजोर समझेंगे। यही सोच उन्हें अकेला महसूस कराने लगती है। जबकि सच यह है कि जरूरत पड़ने पर मदद मांगना एक अच्छी आदत है। बच्चे को समझाएं कि हर इंसान को कभी न कभी किसी की जरूरत पड़ती है। अगर पढ़ाई में दिक्कत हो, मन खराब हो या कोई समस्या समझ में आए, तो भरोसेमंद लोगों से बात करना सही होता है। इससे बच्चा अंदर ही अंदर घुटने की भावना खुलकर अपनी परेशानी साझा करना सीख जाता है, तो उसके रिश्ते भी

## बच्चे का दिमाग 3 गुना तेज करना है? तो आज ही शुरू करें ये 3 काम



सभी पेरेंट्स चाहते हैं कि उनका बच्चा समझदार बने, तेजी से सीखे और आत्मविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़े। लेकिन ये भी समझना जरूरी है कि बच्चों का दिमाग सिर्फ पढ़ाई से तेज नहीं होता, बल्कि घर का माहौल और पेरेंट्स का व्यवहार भी इसमें बड़ी भूमिका निभाता है। पेरेंटिंग कोच चैट गिरधर ने ऐसे तीन आसान तरीके बताए हैं, जिन्हें अगर पेरेंट्स अपने डेली रूटीन की आदत में शामिल कर लें तो बच्चे की सोचने-समझने की क्षमता बाकी बच्चों के मुकाबले में बेहतर हो सकती है। आइए विस्तार में जानते हैं।

### बच्चे के हर सवाल का तुरंत जवाब देने की आदत बदलें

पेरेंटिंग कोच कहती हैं कि जब बच्चा कोई सवाल पूछे तो तुरंत उसका जवाब देने के बजाय उसे खुद सोचने का मौका दें। बच्चे से कहिए कि पहले वह बताए कि उसे क्या लगता है या उसे इस बारे में कितना पता है। ऐसा करने से बच्चा सिर्फ जवाब याद नहीं करता, बल्कि सोचने की कोशिश करता है। धीरे-धीरे उसकी समझ और तर्क लगाने की क्षमता मजबूत होती है। कई बार बच्चे अपने तरीके से जवाब ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं और यही आदत उनके दिमाग को एक्टिव बनाती है। अगर पेरेंट्स हर बात का जवाब तुरंत दे देंगे तो बच्चा खुद सोचने की आदत कम विकसित कर पाएगा। इसलिए बच्चों को सोचने का समय देना बहुत जरूरी है।

### रोज सिर्फ 10 मिनट बच्चे से दिल से बात करें

आजकल ज्यादातर लोग मोबाइल और टीवी में इतने व्यस्त रहते हैं कि बच्चों को पुरा ध्यान नहीं दे पाते। लेकिन अगर आप रोज सिर्फ 10 मिनट भी बच्चे के साथ बिना किसी डिस्टर्बेंस के बिताते हैं तो इसका बहुत अछा असर पड़ता है। जब बच्चे से बात करें तो उस समय मोबाइल दूर रखें, टीवी बंद करें और किसी दूसरे काम में ध्यान न लगाएं। बच्चे को तब ध्यान से सुनिए जब उसे फील कराइए कि उसकी बातें आपके लिए जरूरी हैं। जब बच्चे को लगना है कि उसके पेरेंट्स उसकी बातों में दिलचस्पी ले रहे हैं तो उसका कॉन्फिडेंस बढ़ता है। साथ ही वह खुलकर अपनी बातें शेयर करना सीखता है। यही आदत उसकी याद रखने की कौमोस्टी और मेंटल डेवलाप में मदद करती है।

### बच्चों की तारीफ करना बहुत जरूरी है

कई बार पेरेंट्स बच्चों की गलतियों पर तो तुरंत ध्यान देते हैं, लेकिन उनकी अच्छी बातों की तारीफ करना भूल जाते हैं। पेरेंटिंग कोच का मानना है कि रोज किसी-ना किसी बात के लिए बच्चों की सराहना जरूर की जानी चाहिए। अगर बच्चा किसी काम में मेहनत करता है, नई चीजें सीखने की कोशिश करता है या अच्छा व्यवहार दिखाता है, तो उसकी तारीफ जरूर करें। आप उससे कह सकते हैं कि तुमने बहुत अच्छा ट्राई किया या तुम्हारी मेहनत अच्छी लगी। ऐसे पॉजिटिव शब्द बच्चों को अंदर से खुश करते हैं। इससे उनका मनोबल बढ़ता है और वे आगे भी अच्छा करने की कोशिश करते हैं।

## आपकी इन 5 आदतों की वजह से बच्चे का पढ़ाई में मन नहीं लगता, रह जाते हैं कमजोर!



अक्सर पेरेंट्स की ये शिकायत रहती है कि उनके बच्चे का पढ़ाई में मन नहीं लगता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि कहीं आपकी ही कोई आदत तो बच्चे का पढ़ाई से मन हटा रही? कई बार माता-पिता अनजाने में ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जिनका असर सीधे बच्चे की सोच, आत्मविश्वास और पढ़ाई पर पड़ने लगता है। बच्चा धीरे-धीरे पढ़ाई को बोझ समझने लगता है और उसका फोकस भी कमजोर होने लगता है। सिर्फ डांटना या बार-बार समझाना हर बार काम नहीं करता, क्योंकि बच्चों पर घर के माहौल और व्यवहार का असर सबसे ज्यादा पड़ता है। ऐसे में जरूरी है कि समय रहते उन आदतों को पहचाना जाए जो बच्चे को पढ़ाई से दूर कर सकती हैं। विलिए

### दूसरों से तुलना करना बच्चों को कमजोर बनाता है

कई पेरेंट्स अक्सर अपने बच्चों का कंपैरिजन करते रहते हैं। 'शर्मा जी के बेटे को देखो' जैसी बातें सुनना किसी भी बच्चे को

### माता-पिता की आदतें भी बच्चों पर असर डालती हैं

बच्चे वही सीखते हैं जो वे घर में देखते हैं। अगर माता-पिता खुद हर समय फोन में बिजी रहते हैं, तो बच्चा भी उसी आदत को अपनाने लगता है। कई बार पेरेंट्स बच्चों को पढ़ाई के लिए कहते हैं, लेकिन खुद लगातार स्क्रीन में लगे रहते हैं। ऐसे में बच्चा बातों से ज्यादा व्यवहार को अपनाता है। अगर आप चाहते हैं कि बच्चा पढ़ाई पर ध्यान दे, तो पहले घर का माहौल वैसा बनाइए जहां स्क्रीन टाइम सीमित हो और परिवार साथ में समय बिताए।

### घर का खराब रूटीन भी बड़ी वजह बनता है

अगर बच्चे का सोने और उठने का समय तय नहीं है या वह घंटों मोबाइल और टीवी में लगा रहता है, तो इसका असर भी उसकी पढ़ाई पर साफ दिखाई देता है। बिना सही रूटीन के बच्चे का ध्यान जल्दी भटकने लगता है और वह पढ़ाई में फोकस नहीं कर पाता। पढ़ाई के साथ-साथ सही दिनचर्या भी बहुत जरूरी होती है। बच्चे के लिए ऐसा रूटीन बनाइए जिसमें पढ़ाई, खेल और आराम तीनों के लिए समय हो। इससे बच्चे का मानसिक रूप से भी बेहतर महसूस करेगा।

### हर समस्या खुद हल करना

कई माता-पिता बच्चों का होमवर्क खुद कर देते हैं या उनकी हर छोटी गलती तुरंत सुधार देते हैं। शुरुआत में यह मदद लगती है, लेकिन धीरे-धीरे बच्चा खुद कोशिश करना छोड़ देता है। उसे हर काम में दूसरों की जरूरत महसूस होने लगती है। जरूरी है कि बच्चे को अपनी गलतियों से सीखने दिया जाए। जब बच्चा खुद मेहनत करता है और अपनी गलती सुधारता है, तभी उसमें जिम्मेदारी की भावना और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं।

## छोटे बच्चों को घर पर कैसे पढ़ाएं? महंगे ट्यूशन नहीं, कोच की बताए ये 3 टिप्स आएंगी काम!

कई पेरेंट्स की शिकायत रहती है कि उनके बच्चे का पढ़ाई में मन नहीं लगता, वह जल्दी बोरो हो जाता है या पढ़ने बैठते ही उसका ध्यान दूसरी चीजों में चला जाता है। ऐसे में ज्यादातर माता-पिता बच्चों को डांटना शुरू कर देते हैं, लेकिन हर बार सख्ती करना सही तरीका नहीं होता। बच्चों को पढ़ाई के लिए मजबूर करने के बजाय उन्हें ऐसा माहौल देना जरूरी होता है, जहां वे खुद सीखने में रुचि लेने लगे। घर का माहौल, माता-पिता का व्यवहार और पढ़ाने का तरीका बच्चे की पढ़ाई पर सीधा असर डालता है। अगर बच्चे को सही तरीके से गाइड किया जाए तो वह धीरे-धीरे पढ़ाई को बोझ नहीं बल्कि अपनी आदत बना लेता है। सर्टिफाइड पेरेंटिंग कोच चैट गिरधर ने ऐसे ही कुछ आसान तरीके शेयर किए हैं, जिनकी मदद से आप अपने बच्चे को मन में पढ़ाई के लिए इंटरस्ट जगा सकते हैं।

### गुरु की जगह आसान और मजेदार तरीका अपनाएं

अगर बच्चे को कोई चीज समझ नहीं आ रही है, तो उस पर गुरसा करने या चिल्लाने की गलती ना करें। हर बच्चा अलग होता है और हर बच्चे का सीखने का तरीका भी अलग होता है। कुछ बच्चे जल्दी समझ जाते हैं, जबकि कुछ बच्चों को थोड़ा समय लगता है। आप बच्चे को किसी ह्यूमर, कहानी या अलग-अलग चीजों का इस्तेमाल देकर समझा सकते हैं। जब बच्चे को मजेदार तरीके से चीजें समझाई जाती हैं, तो उनका पढ़ाई में इंटरस्ट बढ़ता है। बच्चा बिना डर के सवाल पूछता है और नई चीजें सीखने की कोशिश करता है।

### लंबे समय तक पढ़ाने के बजाय बीच में ब्रेक दें

कई पेरेंट्स बच्चों को घंटों लगातार पढ़ने के लिए फोर्स करता है, लेकिन छोटे बच्चों के लिए ऐसा करना आसान नहीं होता। बच्चे जल्दी थक जाते हैं और उनका मन पढ़ाई से हटने लगता है। इसलिए बच्चे को लगभग 20 मिनट तक पूरी तरह फोकस कराएं पढ़ाइए और फिर उसे 5 मिनट का छोटा ब्रेक जरूर दें। यह छोटा सा ब्रेक बच्चों को रिलेक्स महसूस कराता है। इससे वह बोरियत महसूस नहीं करता और दोबारा पढ़ने के लिए तैयार हो जाता है। लगातार पढ़ाने से बच्चा सिर्फ ब्रेक रहता है, लेकिन उसका ध्यान पढ़ाई में नहीं रहता।

### पढ़ाई का समय और जगह तय करना जरूरी है

घर पर बच्चों को पढ़ाने समय सबसे पहले उनका एक फिक्स रूटीन बनाएं। बच्चे के पढ़ने का समय और जगह तय कर दें। ताकि वह रोज उसी समय पर पढ़ने बैठे। जब बच्चा रोज एक ही जगह और एक ही समय पर पढ़ाई करता है तो उसका दिमाग खुद उस चीज के लिए तैयार होने लगता है। धीरे-धीरे यह उसकी आदत बन जाती है और उसे पढ़ाई में



# भारत के पहले स्वर्ण पदक विजेता रणधीर सिंह का निधन

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशियाई खेलों में निशानेबाजी में भारत के पहले स्वर्ण पदक विजेता रणधीर सिंह का बुधवार (27 मई) को 79 साल की उम्र में निधन हो गया। कई दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहने के बाद उन्होंने नई दिल्ली में अपने आवास पर अंतिम सांस ली। स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के कारण सिंह ने हाल में एशियाई ओलंपिक परिषद (ओसीए) के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्हें 2024 में चार साल के कार्यकाल के लिए चुना गया था। वे भारत के पहले एशियाई खेलों के शूटिंग स्वर्ण पदक विजेता और अनुभवी खेल प्रशासक थे, जिनकी विरासत पांच ओलंपिक खेलों तक फैली हुई थी। उनके परिवार में उनकी पत्नी विनीता और बेटियां यश्विना, सुनेना और राजेश्वरी हैं।



● रणधीर सिंह का प्रशासनिक करियर - खेलों की तरह ही अपने सफल प्रशासनिक करियर में उन्होंने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के महासचिव और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। सिंह ने 1987 से 2010 तक भारतीय ओलंपिक संघ के महासचिव के रूप में कार्य किया, और 2001 से 2014 के बीच अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति में भी कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2003 में, उन्होंने विश्व डॉपिंग - रोधी एजेंसी में आईओसी का प्रतिनिधित्व भी किया, जिससे वैश्विक खेल प्रशासन के क्षेत्र में उनकी प्रतिष्ठा और भी मजबूत हुई।

## खेल करियर में पांच ओलंपिक

पटियाला के पूर्व शाही परिवार में जन्मे और पूर्व महाराजा भूपिंदर सिंह के वंशज, रणधीर सिंह ने शूटिंग में अपनी बेहतरीन प्रदर्शनों से, भारतीय खेल में अपनी एक अलग पहचान बनाई। उनके शानदार खेल करियर में पांच ओलंपिक में भागीदारी और 1978 के बैंकॉक एशियाई खेलों में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक शामिल था। इस उपलब्धि के लिए उन्हें 1979 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

## रणधीर सिंह का ओलंपिक सफर

रणधीर सिंह का ओलंपिक सफर कई दशकों तक चला। टोक्यो 1964 में भारत के दल में एक रिजर्व शूटर के तौर पर शामिल थे, जिसके बाद उन्होंने मेक्सिको 1968, म्यूनिख 1972, मॉस्को 1976, मॉस्को 1980 और लॉस एंजिल्स 1984 के ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया।

## फ्रेंच ओपन 2026

### 17 वर्षीय युवा 'मोइज कोमे' ने रचा इतिहास

● 1991 के बाद ग्रैंड स्लैम मैच जीतने वाला बना सबसे कम उम्र का खिलाड़ी

पेरिस (एजेंसी)। फ्रेंच ओपन 2026 में चार्ल्स इट्टो ने चार दिनों में कुल 17 वर्षीय क्रिशीर 'मोइज कोमे' ने टूर्नामेंट में अपनी पहली जीत दर्ज करके इतिहास रच दिया। इस युवा फ्रांसीसी स्टार ने मंगलवार को पूर्व यूएस ओपन चैंपियन मॉरिन सिलिक को सीधे सेटों में हराकर ग्रैंड स्लैम मैच पर शानदार आगुल किया और अग्रे से जुड़ने का एक दुर्लभ रिकॉर्ड भी बनाया। कोमे ने 7-6(4), 6-2, 6-1 से जीता।

● यह असाधारण है - मैच के बाद कोमे ने कहा, 'यह आसान नहीं था। मैं हमेशा वर्तमान पल में रहने की कोशिश करता हूँ और कोर्ट के बारे में ज्यादा नहीं सोचता। आज मैं शांत हूँ क्योंकि मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि मैंने बहुत सफल रखा, उन्होंने आगे कहा, 'यह बहुत ही भावुक कर देने वाला पल है, यह असाधारण है, इस टूर्नामेंट में आने से पहले, मुझे सोच में नहीं पती था कि क्या उम्मीद करनी चाहिए, मेरी टीम और मैंने, जिताना ही संकेत, खुद को तैयार करने के लिए बहुत मेहनत की थी।'

● मैच की शुरुआत पर काफी अभ्यास किया - मैच के बाद फ्रेंच ऑनफंसेस में कोमे ने कहा, 'मुझे काफी अच्छा महसूस हुआ। मुझे लाफोरे में भी तैयारी पूरी है, मैं पूरी तरह तैयार था। मेरी और मेरी टीम के साथ वॉल्टू प्रदर्शन पर, और इस बात पर काफी काम किया था कि मैच को थिंक रहने से खेलना है।'

## झारखंड की दूसरी अंतर्राष्ट्रीय महिला हॉकी अंपायर बनी नीतू कुमारी

● 18 एशिया कप में करंगी अंपायरिंग

रांची (एजेंसी)। झारखंड की बेंटी नीतू कुमारी महलों ने हॉकी जगत में राज्य का नाम रोशन करते हुए एक नई उपलब्धि हासिल की है। रांची जिले के हरादास की रहने वाली नीतू अंतर्राष्ट्रीय हॉकी अंपायर के रूप में क्वालीफाई कर झारखंड की दूसरी महिला अंतर्राष्ट्रीय अंपायर बन गई हैं। अब वह 29 मई से 6 जून तक जापान के काकागिगाहारा में आयोजित होने वाले 18 एशिया कप 2026 में अंपायरिंग करती नजर आएंगी। कुमारी को यह इस प्रशिक्षण टूर्नामेंट के लिए जानना रवाना हो गई। नीतू का हॉकी से रिश्ता बचपन से ही रहा है। उन्होंने कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में झारखंड टीम का प्रतिनिधित्व किया है। उनके परिवार में उनकी सिरफ खेले हैं बल्कि एक विरासत की तरह है। उनकी मां रवींद्रा टोपांनी खुद राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी रह चुकी हैं और उन्होंने भी बहुत ही कोच के रूप में खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रही हैं। नीतू की पहली कोच भी उनकी मां ही थीं, जिन्होंने बचपन से उन्हें हॉकी को बारीकीया सिखाया।



## फ्रेंच ओपन

# कार एक्सिडेंट के बावजूद जीतीं कोको गॉफ

सबालेंका ने 16 महीने में रिकॉर्ड 30 मैच जीते

**मेदवेदेव उल्टेपर काशिकार**  
पेरिस (एजेंसी)। फ्रेंच ओपन में खिताब बचाने उररी अमेरिकी टेनिस स्टार कोको गॉफ मंगलवार को एक छोटे कार हादसे का शिकार हो गईं। हालांकि, उन्हें चोट नहीं आई और वे मैच जीतकर दूसरे दौर में पहुंच गईं। 22 साल की गॉफ ने बताया कि रोलिंग गैरों पहुंचने के दौरान उनकी कार पोल से टकरा गई और क्षतिग्रस्त हो गई। उन्हें टैक्सी से स्ट्रेचियर पहुंचना पड़ा। गॉफ ने अपने ही देश की टेलर ट्रांससेंड को 6-4, 6-0 से हराया। गॉफ के पतुनाबिक, दिन कान्फी घटनाओं से भरा था, जिससे उनका ध्यान मैच के दबाव से हट गया। कोको गॉफ फिफ्टेन साल फ्रेंच ओपन चैंपियन रही थीं। उन्होंने फाइनल में पेरुना सबालेंका को हराकर खिताब जीता था। ओसाका एक घंटे 55 मिनट में जीतीं - विमस सिल्वस के एक अन्य मैच में जापान की नाओमी ओसाका ने जर्मनी की लौरा सीगमंड को सीधे सेटों में 6-3, 7-6 से हराया। अब उनका पुष्कलवा क्रोएशिया की डोना वेंकिंक से होगा, जिन्होंने फ्रेंस की ओलिव टुब्ले को 6-3, 6-2 से हराया है। ओसाका साल के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलिया ओपन के तीसरे राउंड से हट गई थीं। तब उन्होंने चोट पर ध्यान देने की बात कही थी।

**सबालेंका ने जैसिका को हराया, 16 महीने में रिकॉर्ड 30वीं जीती**  
वॉल्टू नंबर-1 पेरुना सबालेंका ने पहले राउंड में स्पेन की जैसिका बुजामानेरो (वॉल्टू नंबर-50) को सीधे सेटों में 6-4, 6-2 से हराया। पेरिस के कोर्ट फ्रिलियर चैंपियन पर खेला गया यह मैच 75 मिनट तक चला। सबालेंका ने ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 के बाद से विमस सिल्वस में सबसे ज्यादा 30 ग्रैंड स्लैम मैच जीते हैं। उनसे ज्यादा मैच जीतने का रिकॉर्ड सिर्फ मैस सिल्वस के टोनी में यानिक सिमर (31) और कार्लोस अल्कारेज (31) के नाम हैं। जीत के बाद सबालेंका ने कहा - 'मैंने अपने नेट गेम में सुधार किया है। अब इस अंदरूनी खेल का आनंद ले रही हूँ।' सबालेंका गमी से परेशान दिखाईं मैच खत्म होते ही उन्होंने गमी से राहत पाने के लिए चेहरे पर बर्क लगाईं।



सिल्वसियस दूसरे दौर में, 17 साल के कुआमे ने सिल्वस को हराया - युवान के फ्रेंचमैन सिल्वसियस अगले दौर में पहुंच गए। उनके प्रतिद्वंद्वी एलेक्सेंडर गुलर चोट के कारण मैच बीच में छोड़ने को मजबूर हो गए। वहीं, फ्रेंस के 17 साल के मोइज कुआमे ने अनुभवी मॉरिन सिल्वस को हराकर ग्रैंड स्लैम करियर को शानदार शुरूआत की। एशियाई टूर के अन्तगार वे 2008 या उसके बाद जन्मे पहले खिलाड़ी बना गए हैं, जिन्होंने किसी ग्रैंड स्लैम मुकाबले में जीत दर्ज की है।

# रांची में चार दिन तक टूटते रहे एथलेटिक्स के रिकॉर्ड्स

गुविंदरवीर, विशाल टीके और तेजस्विन शंकर ने रचा इतिहास

रांची (एजेंसी)। राजधानी रांची के मोरहाबादी स्थित विरसा मुंड स्टैडियम में 22 से 25 मई 2026 तक आयोजित 29वीं नेशनल सीनियर एथलेटिक्स फेडरेशन प्रतियोगिता भारतीय एथलेटिक्स के इतिहास में एक यादगार अभ्यास बन गया। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, झारखंड सरकार के खेलकूद एवं युवा कल्याण और झारखंड एथलेटिक्स संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देशभर से 750 से अधिक खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। चार दिन तक चले इस आयोजन में राष्ट्रीय रिकॉर्ड, मीट रिकॉर्ड और कॉमनवेल्थ गेम्स क्वालिफिकेशन की श्रृंखला गढ़ी। ट्रेक से लेकर फील्ड इवेंट तक खिलाड़ियों ने ऐसा प्रदर्शन किया जिसने भारतीय एथलेटिक्स को नई ऊंचाई दी।

● गुविंदरवीर सिंह का नेशनल रिकॉर्ड - इसी दिन पंचम के 10.9 सेकेंड का रिकॉर्ड बना दिया। उन्होंने शुक्रवार के सेमीफाइनल में 10.17 सेकेंड दौड़ था लेकिन फाइनल में अपने प्रदर्शन को और बेहतर करते हुए स्वर्ण पदक जीत लिया। उन्होंने अनिमल कुजूर के 10.18 सेकेंड के मीट रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया। साथ ही यशमोहन कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए निर्धारित 10.16 सेकेंड के क्वालिफिकेशन मार्क को भी पार कर लिया। रैस के बाद गुविंदरवीर सिंह ने



**बेंगलूर (एजेंसी)।** कप्तान जगत पाटीदार की शानदार बल्लेबाजी और शिव मंदबाबाजी के कमाल प्रदर्शन की बदौलत रायल चैलेंजर्स बेंगलूर लगातार दूसरी बार फाइनल में पहुंच गई हैं। धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टैडियम में खेले गए आईपीएल 2026 के पहले क्वालीफायर में आरसीबी ने गुजरात को 92 रनों से हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की की है। टीएस हरकर पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी ने कप्तान जगत पाटीदार के नाबाद 93 रनों की बदौलत 254-5 का रिकॉर्ड स्कोर खड़ा किया। जो आईपीएल फ्लॉपोंफ के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा स्कोर है।

**पाटीदार की कप्तानी पारी -** गुजरात के फील्डरों ने पाटीदार को दो बार जीकनवदन दिया, जिसका उन्हें भारी रानीयाणा धुगतना पड़ा. पाटीदार ने हर गेंदबाज पर हमला बोला और सिर्फ 21 गेंदों में अपना अंशफल पूरा कर लिया. पाटीदार अंत तक बल्लेबाजी और सिर्फ 33 रनों में 93 रन बनाकर नाबाद रहे, जिसमें पांच चौके और नौ सैंडविके शामिल थे. जिसकी वजह से उनके प्लेयर ऑफ दि मैच का अवार्ड दिया गया। इसके अलावा कोहली 25 गेंदों में 43 रन बनाकर बौलड हो गए. जबकि पांडेकरल 19 गेंदों में 20 रन बनाकर पॉसिलियन लौट गए. कुमाल पांडेया ने 28 गेंदों में तेजी से 43 रन बनाए. जिसमें पांच चौके और दो छक्के शामिल थे।

विशाल टीके ने इतिहास रच दिया. उन्होंने 44.98 सेकेंड का समय निकालकर भारतीय रजनी पर 45 सेकेंड से कम समय में 400 मीटर दौड़ पूरी करने वाले पहले भारतीय एथलेटिक बने का गौरव हासिल किया. उन्होंने अपना ही 1982 यि फि र् ई 45.12 सेकेंड बेहतर किया. जो पिछले चार घण्टों में बेहतर तरीके से सामू क्य रह रहे हैं और भविष्य में उनसे और बड़े प्रदर्शन की उम्मीद है. हालांकि अनिमल कुजूर फाइनल में 10.20 सेकेंड के साथ दूसरे स्थान पर रहे, जबकि रिलास के प्रथम प्रदर्शन 10.29 सेकेंड के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

## आरसीबी लगातार दूसरी बार पहुंची फाइनल में

जीत के बाद अनुष्का को विराट से मिली जादू की झाप्टी, वायरल वीडियो ने जीता फैंस का दिल

धर्मशाला में रायल चैलेंजर्स बेंगलूर और गुजरात टाइटन्स के बीच हुए क्वालीफायर 1 मुकाबले के दौरान अर्धनेत्री अनुष्का शर्मा अपने पति विराट कोहली की सबसे बड़ी सपोर्टिव बनकर स्टैंड में दिखाईं थीं. जैसे ही आरसीबी ने आईपीएल 2026 के फाइनल में प्रवेश किया, विराट ने मेडियन पर अनुष्का को गले लगाकर इस शानदार पल का जश्न मनाया और स्टार कपल के इस लविंग मोमेंट ने उनके फैंस का दिल जीत लिया. अनुष्का और विराट के खुलेआम प्यार भर जयन ने इंटरनेट पर हलचल मचा दी, और फैंस इस जोड़े की कैमिस्ट्री और खुशी पर फिदा हो गए। बीते मंगलवार को विराट कोहली की रायल चैलेंजर्स बेंगलूर ने क्वालीफायर 1 में गुजरात टाइटन्स को हराकर आईपीएल 2026 के फाइनल में प्रवेश किया. यह मैच धर्मशाला में खेला गया था. सिर्फ कोहली जीत ही नहीं, बल्कि विराट और अनुष्का के बीच साझा किंग गए प्यार पलों ने भी सबका ध्यान खींचा. दिल से निकली मुस्कान से लेकर गर्मजोशी भर जयन के इशारों तक, इस जोड़े की कैमिस्ट्री ने जोश से भर माहौल में और भी चार चांद लगा दिए।



गुजरात के पावर प्ले में ही 51 के स्कोर पर 53 विकेट करके गुजरात को एक बड़ा इटका दिया. जोस बटरन तरीके से आउट होना भी शामिल है. जब जैकब डूडी की गेंद पर शॉट खेलते समय उनके हाथ से बल्ला छुटी तो शानदार अंगुष्ठां की, जबकि भूयनेश्वर कुमार्, रसिक सनाना डाट और कुमाल पांडेया ने दो-दो विकेट लिए।



